International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(2): 330-332

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(2): 330-332
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-02-2023
Accepted: 03-04-2023

डॉ. राम नारायण राय
अतिथि शिक्षक, संस्कृत विभाग
राम बहादुर सिंह, महाविद्यालय,
इंदौर मोहिउद्दीन नगर, समस्तीपुर,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. राम नारायण राय
अतिथि शिक्षक, संस्कृत विभाग
राम बहादुर सिंह, महाविद्यालय,
इंदौर मोहिउद्दीन नगर, समस्तीपुर,
बिहार, भारत

वेद का स्वरुपात्मक परिचय

डॉ. राम नारायण राय

प्रस्तावना

भारतीय मनीषा को आध्यात्मिक भावभूमि पर सर्वतोभावेन सुप्रतिष्ठित करने में जिन सारस्वत आधारशिलाओं का प्रमुख योगदान रहा है, वेद उनमें सर्वोपरि हैं। भारतीय धर्म–दर्शन, कला–कौशल, ज्ञान–विज्ञान, योग, शिल्प, संगीत, लोक आचरण, मर्यादा आदि मानव जीवन के लौकिक एवं पारलौकिक अभ्युत्थान के लिए अपेक्षित एवं उपयोगी सभी सिद्धान्तों एवं उपदेशों के आकर्षक वर्णन को अपने विशाल कलेवर में आत्मसात करते हुए वेदों ने अपने आपको अक्षयज्ञान का सिन्धु तथा समस्त धर्मों का मूल प्रमाणित करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। आर्यावर्त की सांस्कृतिक चेतना की गंगोत्री के रूप में सहस्राब्दियों से निरवच्छिन्न प्रवाहित ज्ञान की बहुरंगी उर्मियों के कलेवर इतने प्रभावशाली रहे हैं कि वेदों की ज्ञान राशि के अभाव में किसी भी प्रकार की भारतीय चिन्तन परम्परा के अग्रगामी होने की कल्पना तक नहीं की जा सकती। वेदों से अपरिचित अध्येताओं को कभी भी ज्ञान की वे रश्मियाँ आलोकित नहीं कर सकती जो वेदों को छोड़कर अन्य किसी भी क्षेत्रा में सन्निहित हैं। वैदिक ऋचाओं के गम्भीर अवलोकन से ही मानव इस नश्वर जगत एवं समस्त ब्रह्माण्ड की रहस्यात्मक गुत्थियों को सुलझाने में समर्थ हो सकता है। सभी प्रकार के शास्त्र, उपनिषद्, दर्शन, पुराण, स्मृति आदि धर्मग्रन्थों के उत्स के रुप में प्रतिष्ठित वेद को मनुस्मृतिकार भगवान् मनु ने सकल धर्मों का मूल माना है– "वेदोऽखिलोधर्ममूलम्" वेदों के विशाल प्रांगण से ही प्रकृति, जगत्, जीव तथा परमात्मा के वास्तविक स्वरुप की उद्भावना प्रतीत होती है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के प्रत्येक पक्ष का अनुसन्धित्सु वेदों के स्वरुप, महिमा एवं सिद्धान्त को सर्वतोभावेन हृदयंगम् की भावभूमि तैयार करता है।

यह एक स्थापित सत्य है कि कि भारतीय जनमानस को ज्ञान के किसी भी क्षेत्रा से परिचित कराने से पूर्व वेदों की आगाध ज्ञान–राशि का अवगाहन नितान्त आवश्यक है। भारतीय मनीषा का प्रायः कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है, जिसके सम्बन्ध में वेदों में गम्भीर चिन्तन प्रस्तुत नहीं किया गया हो। वेदों की ऋचाएँ उन तथ्यों को समाहित किये हुए हैं, जिनकी आधारशिला पर प्राचीन तथा अर्वाचीन ज्ञान के भव्य महल सुप्रतिष्ठित हैं। विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन जिस अन्तर्दृष्टि के साथ वेदों में किया गया है, उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि तत्कालीन ऋषियों एवं मन्त्राद्रष्टाओं की सूक्ष्मेक्षिका किस कोटि की थी। आधुनिक युग में कतिपय ऐसे वैज्ञानिक अनुसंधान के सकारात्मक परिणाम सामने आये हैं, जिनके उत्स विस्तृत रुप में वेदों में वर्णित हैं। उदाहरण के लिए अभियांत्रिकी एवं वैज्ञानिकी से सम्बद्ध सूक्तों को देखा जा सकता है।

वैदिक ऋचाओं के पश्चात् जिन गम्भीर विषयों का प्रतिपादन किया गया, उनमें संहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद्, शिक्षा, कल्प, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष आदि वेदांगों का अध्ययन महत्त्वपूर्ण माना गया है। विशेष रूपेण ध्यातव्य है कि वेदों में वर्णित पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, नारदीयसूक्त, शिव संकल्पसूक्त, श्रद्धासूक्त आदि के तात्विक विवेचन से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, दर्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक चेतना को विभिन्न स्वरूपों के अवलोकन के अवसर प्राप्त होते हैं।वैदिक साहित्य से कोई भी विषय असम्पृक्त नहीं है। यही कारण है कि किसी भी शोधार्थी के लिए, चाहे उसके अनुसंधान का विषय प्रेम से सम्बद्ध हो अथवा आर्ष महाकाव्यों में वर्णित किसी कालजयी नायक अथवा नायिका के जीवन से सम्बद्ध विभिन्न तत्त्वों का मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में अनुशीलन हो। अग्रिम अनुच्छेदों में मेरे द्वारा वेद के स्वरूपात्मक परिचय से सम्बद्ध कतिपय महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक तथ्यों के सम्यक् उपस्थापन का प्रयास किया जाएगा।

वेद शब्दमय ब्रह्म का मूर्त्तस्वरूप है, इसलिए सभी शास्त्रों में वेद शब्द का अपर पर्याय 'ब्रह्म' प्रसिद्व है। वेद का जो विधि प्रधान भाग है वह तो 'ब्राह्मण' नाम्ना ही सर्वत्रा व्यवहृत है। 'ब्रह्मण इदं ब्राह्मणम्' इस व्युत्पत्तिलम्य अर्थ के कारण ही उक्त भाग 'ब्राह्मण' संज्ञा का स्वारस्य सिद्व होता है।

'देवपितृमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातन :'

वेद को देव, पितर एवं मनुष्यों को सनातन चक्षु कहा गया है। मनु महाराज के अनुसार तीनों काल में इनका उपयोग है और सब वेद से प्राप्त होता है–

'भूतं भव्यं भविष्यं च सर्व वेदात् प्रसिध्यति'।

भारतीय मान्यता के अनुसार वेद ब्रह्मविद्या के ग्रन्थ भाग नहीं स्वयं ब्रह्म हैं– शब्द ब्रह्म हैं। ब्रह्मानुभूति के बिना वेद–ब्रह्म का ज्ञान सम्भव ही नहीं है अर्थात् जिसने वेद ब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया है, वे ही वेद की स्तुति के अधिकारी है–'अथापि प्रत्यक्षकृताः स्तोतारो भविन्त'। कहते हैं कि वैदिक वाङ्मय में सम्पूर्ण देवता समाये हुए हैं, जो उन्हें जान लेता है, वह उनमें समाहित हो जाता है। तात्पर्य है कि जिन्हें आर्षदृष्टि प्राप्त है, वे ही वेद ब्रह्म के सत्य का दर्शन कर सकते हैं, और वैदिक भाषा के रहस्य को समझ सकते हैं। इसलिए वेद की मूल चार संहिताओं (मन्त्रों) की व्याख्या करतें है। इस ब्राह्मण भाग के बिना इन वेदों के मूल मन्त्रार्थ स्पष्ट नहीं हो पाते। ब्राह्मण के ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद् ये तीन विभाग हैं, जो प्रत्येक संहिताओं के अलग–अलग हैं। मन्त्रा तथा ब्राह्मण दोनों को वेद कहा गया है–

'मन्त्राब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'।

इनमें ज्ञान–विज्ञान के साथ–साथ आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक समस्त पक्षों का प्रतिपादन है। वस्तुतः वेद धर्म, अर्थ काम और मोक्ष इन चार प्रकार के पुरूषार्थो का प्रतिपादन करते हैं जिनकी व्याख्या वेदाघों के द्वारा स्पष्ट होती है। अतः इन वेदाघों का भी अतिशय महत्त्व है। ये वेदाघों छः प्रकार के हैं–

"शिक्षा कल्पोऽथ व्याकरणं निरुक्त छन्दसा च यः।
ज्योतिषामयनं चैव वेदघानि षडेव तु।।"

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष। इसके साथ ही चारों वेदों के चार उपवेद भी हैं– आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और स्थापत्यवेद।

सर्वसाधारण के लिए वेद के अर्थो एवं भावों को अत्यधिक स्पष्ट करने की दृष्टि से ऋषि–महर्षि द्वारा इतिहास एवं पुराणों की रचना की गयी– 'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपवृंहयेत्'। वेदों का उपवृंहण इतिहास और पुराणों द्वारा ही हुआ है। अर्थात् वेदार्थ का विस्तार–इतिहास–पुराणों द्वारा किया गया है। अतः इतिहास पुराण को पच्चम वेद माना गया है –'इतिहासं पुराणं पच्चमं वेदानां वेदम्' (छन्दोग्य०)। इतिहास के अन्तर्गत रामायण और महाभारत आदि ग्रन्थ आते हैं तथा पुराणों में भगवान वेद व्यास द्वारा रचित अठारह महापुराण एवं सभी उपपुराण सम्मिलित हैं।

भारतवर्ष की यह सर्वाधिक विशेषता है कि यहाँ ज्ञान–विज्ञान, शस्त्र एवं शास्त्रविद्या, साहित्य–कला, सभ्यता– संस्कृति आदि का मूल वेद माना जाता है या इन सबका सम्बन्ध वेदों से जोड़ा जाता है। यह वेदों का देश है, महर्षियों का देश है। वेद ज्ञानराशि होने तथा सर्वव्यापक तत्त्वदर्शन आदि से समलंकृत होने के कारण विश्व के विभिन्न देशों के विद्वानों का कथन बरबस इस ओर आकृष्ट हुआ और विद्वत्समाज ने एक कण्ठ होकर भारत की महानता और श्रेष्ठता को स्वीकार किया। संसार में शायद ही ऐसा कोई देश हो जो कहता हो कि हमारी सभी विद्याओं का हमारी सभी संस्कृतियों एवं सभ्यताओं का, हमारे संगीत और हमारी कलाओं का मूल हमारे धार्मिक ग्रन्थ हैं। केवल भारत में सनातन धर्म के मूल वेद को ऐसा अद्वितीय गौरव प्राप्त है। 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम् और धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'– जैसे श्रुति– स्मृति वाक्यों से स्पष्ट है कि समस्त मानवों के अभ्युत्थान, अभ्युदय और श्रेय के लिए एकमात्रा वेद ही सर्वस्व हैं। सर्वविषयात्मक, सर्वविद्यात्मक सर्वज्ञान प्रकाशात्मक वेद परमेश्वर के शासन रूप में अवतरति हैं।

'वेद' शब्द 'विद्सत्तायाम्' 'विद्ज्ञाने'' विद् विचारणे और 'विद्लृलाभे,' इन चार धातुओं से निष्पन्न होता है। जिसका अर्थ होता है– जिसकी सदैव सत्ता हो जो अपूर्व ज्ञानप्रद हो, जो ऐहिकामुष्मिक उभयविध विचारों का कोश हो और जो लौकिक और लोकोत्तर लाभप्रद हो, ऐसे ग्रन्थ को वेद कहते हैं।

वेदों में सत्ता, ज्ञान, विचार और लाभ (आनन्द) गुण विद्यमान है तथा विचारणा रूप अर्थ को व्यक्त करने के कारण यह सच्चिदानन्द रूप ब्रह्म का वाचक है। जिसके द्वारा धर्मादि पुरूषार्थ चतुष्ट्य सिद्धि के उपाय जाना जाता वह वेद है। आचार्य सायण के अनुसार जो इष्ट की प्राप्ति एवं अनिष्ट के परिहार के अलौकिक उपायों का ज्ञान करावे वह वेद है।

"इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः"।

सत्ता –

ईश्वरवादी सभी सम्प्रदायों में ईश्वर अनादि और अनन्त परिगृहीत है। 'वेद' भगवान् की वाणी है, अतः वह भी अनादि एवं अनन्त है। स्मृति वचन है–

"अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा"।

अर्थात् वेद स्वयम्भू ब्रह्मा की वह वाणी है, जिसका न कोई आदि है और न अन्त। अतएव वह नित्य है। ब्रह्मा भी वेदवाणी के निर्माता नहीं, अपितु यथोपदिष्ट उत्सर्ग–प्रदान करने के कारण उत्स्रष्टा ही है। इस प्रकार वेदों की सत्ता त्रिकालावाधित है।

कदाचित् कोई कुतार्किक 'वाणी' शब्द को सुनकर आशंका करे कि लोक में तो वाणी त्रिकालाबाधित नहीं होती। जाग्रत अवस्था में ही वाणी का व्यापार प्रत्यक्ष दृष्ट है। स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीयावस्था में तो वाणी के व्यापार की कथमपि सम्भावना नहीं की जा सकती। अतः आस्तिकों के कथित भगवान् के भी शयन काल में वाणी का अवरोध युक्तिसंगत है, अतः उसे सदा अनवरूद्ध सत्ता–सम्पन्न कैसे कहा जा सकता है? यद्यपि यह शंका कुतर्क पर आश्रित है, क्योंकि संसार में कोई भी दृष्टान्त सर्वांश में परिगृहीत नहीं हुआ करता। किन्तु सभी उपमाएँ एक सीमा तक उपमेय वस्तु के गुणों और दोषों की परिचायक हुआ करती हैं। मुख को चन्द्र के समान कहने का चन्द्रगत आीादकतादि गुणों का ही मुख में आरोप करना हो सकता है न कि शशक क्षीणत्व दोष का उद्घाटन करना। ठीक इसी प्रकार वेद को भगवान् की वाणी कहने का तात्पर्य यही है कि यावत् शब्द व्यवहार एकमात्रा वेद–वाणी–निःस्यूत शब्द राशि है, क्योंकि वह अपौरूषेय है, अतः किसी पुरूष विशेष की वाणी से उसका सम्बन्ध स्वीकृत नहीं। इसलिए आपाततः वेद भगवान् का ही वैभव हो सकता है। वेद को भगवद्वाणी न कहकर उसे भगवान् का निःश्वास कहा गया है–

(क) अस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद्यदृग्वेदोयजुर्वेदः
सामवेदोऽथर्वाघिर्तैरसः (बृहदारण्यक–2/4/10)
(ख) यस्य निश्वसितं वेदाः। (सायणीय भाष्य मघर्तैलाचरण)

अर्थात्–(क) इस महाभूत श्रीमन्नारायणभगवान् के ये श्वास ही हैं। जो गिंवेद, यजुर्वेद, और अथर्वाघिर्तैरस–अथर्ववेद है। (ख) वेद जिस भगवान् के निःश्वासोच्छ्वास हैं वे प्रभु वंदनीय हैं।

कहना न होगा कि उक्त प्रमाणों में वेदों को भगवान् का श्वासोच्छ्वास कहने का यह अभिप्राय है कि श्वास प्रयत्न साध्य वस्तु नहीं, किन्तु निसर्गजन्य है तथा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीयावस्था में भी यावज्जीवन वह विद्यमान रहता है। एतावता यह सुप्रसिद्व है कि वेद भी कोई कृत्रिम वस्तु नहीं, अपितु भगवान् का सहज व्यापार है। संसार भले ही सम्भव और विनाशशील हो, परन्तु

वेदों की सत्ता आदि सृष्टि से पूर्व भी थी और प्रलयान्तर में भी वह अवाधरूप में अक्षुण्ण बनी रहेगी। जैसे श्रीमन्नारायण भगवान् अनादि, अनन्त और अपरिणामी हैं, ठीक इसी प्रकार वेद भी अनादि अनन्त और अपरिणामी है। इस प्रकार सिद्व है कि 'विद् सत्तायाम्' धातु से निष्पन्न 'वेद' शब्द त्रिकालाबाधित सत्ता सम्पन्न है।

ज्ञान

वेद जहाँ प्रत्यक्ष अनुमान और उपमान की सीमापर्यन्त सीमिति लौकिक ज्ञान की अक्षय निधि हैं, वहीं प्रत्यक्षानुमानोपमानादि से सर्वथा और सर्वदा अज्ञेय अतीन्द्रिय, अवाड्मनसगोचर लोकोत्तर ज्ञान के तो एकमात्रा वे ही अन्धे की लकड़ी के सामान आधारभूत हैं। वस्तुतः लौकिक ज्ञान वेदों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय नहीं है, तादृश वर्णन तो वैदिकों के शब्दों में केवल प्रत्यक्षानुवादमात्रा है। कुछ लोग कहते हैं कि 'अग्निर्हिमस्य भेषजम्' –यह बात वेद के बिना भी वज्रमूर्ख तक स्वानुभव से जानते हैं, फिर वेद में ऐसी छिछली बातों की क्या जरूरत थी? परन्तु आक्षेप्ताओं को मालूम होना चाहिये कि वेद का यह प्रत्यक्षानुवाद भी उस कोटि का साहित्य है, जो कि आज के कथित भौतिक विज्ञानवादियों की समस्त उछल कूद की पराकाष्ठा के परिणामों से सदैव एक कदम आगे रहता है कि 'अग्नि शीत की औषधि है' अर्थात् आग तापने से पाला दूर हो जाता है, अपितु वेद के इन शब्दों में यह उच्च कोटि का विज्ञान भी गर्भित है कि हिमानी प्रदेशों में उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियाँ अतीव उष्ण होती हैं। शिलाजीत, केशर, संजीवनी और कस्तूरी आदि इस तथ्य के निदर्शन हैं अथवा बर्फ बनाने का नुस्खा अग्नि ही है अर्थात् इतनी डिग्री उष्णता पहुँचाने पर तरल राशि वर्फरूप में घनीभाव को प्राप्त हो जाती है। कहना न होगा कि वर्तमान भौतिक विज्ञानवादी वर्षों अनुसंधान करने के उपरान्त एक मुद्दत में वेद के उपयुक्त मन्त्राांश द्वारा प्रतिपादित हिम विज्ञान को समझ पाये हैं।

'अग्निषोमात्मकं जगत्' इस वैदिक घोषणा का तथ्य समझने में अभी वैज्ञानिकों को शताब्दियाँ लगेंगी। परमाणु विज्ञान, विज्ञान की चरम सीमा समझी जाती है। परन्तु वस्तुतः वह विज्ञान की 'इति' नहीं, अपितु 'अथ' है। कथित 'नाइट्रोजन' और प्रोटोन नामक परमाणु के विश्लिष्ट अंतिम दोनों अंश वेदोक्त अग्नि और सोम तत्त्व के ही स्थूलतम प्रतिनिधि हैं। जिस तत्त्वांश को अन्तिम समझकर आज का भौतिक विज्ञानवादी केवल अनिर्वचनीय शक्तिपुच्ज (एनर्जी) मात्रा कहने को विवश है और तत्संश्लिष्ट 'अपर' अंश को अच्छेद्य सह अस्तित्वशाली आवरण बताता है, वास्तव में वे दोनों अग्नि और सोम के ही स्थूलतम अत्यणु हैं। यह परमाणु विज्ञान का चरम बिन्दु नहीं किन्तु प्रवेश द्वार मात्रा है। अभी तो अपच्चीकृत तन्मात्राएँ, अहंकार और महान् इन द्वारों की लम्बी मंजिल तय करनी पड़ेगी, तब कभी 'अव्यक्त' तत्त्व तक पहुँच हो पायेगी। उस समय साम्प्रतिक भौतिक विज्ञानवादियों द्वारा कथित एनर्जी और आवरण नामक तत्त्व द्वयात्मक परमाणु पुरूष और प्रकृति के ऐक्यभूत अर्द्धनारीश्वर की संज्ञा को धारण कर सक्रेंगे। तात्पर्य यह है कि वेदों का प्रमुख विषय भौतिक विज्ञान भी वेदों में इतनी उच्च कोटि का वर्णित है कि जिसकी तह तक पहुँचने में अनुसंधायकों को अभी कई सहस्त्राब्दियाँ लग सकती है। स्मृतिकारों के अनुसार प्रत्यक्षानुमान और उपमान आदि साधनों द्वारा जो उपाय नहीं जाना जा सके, वह उपाय वेद से ज्ञान करना ही वेदों का वेदत्व है–

"प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते ।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता"।।

मन क्या है? बुद्वि क्या है? स्वप्न और सुषुप्ति की अनुभूतियाँ किमाधारभूत है? जीवन–मरण क्या है? मृत्यु के पश्चात् क्या कुछ होता है? इत्यादि मानव–प्रश्नों को मानव–बुद्वि द्वारा बलात् सुलझाने का असफल प्रयत्न किया जायगा तो हो सकता है कि अनुसंधायक सनकी अर्द्धविक्षिप्त, किंवा मस्तिष्क की धमनी फट जाने से मृत्यु का ग्रास ही न बन जाय। इसलिए अनुभवी तत्त्वदर्शियों की खुली घोषणा है कि

"अतीन्द्रियाष्च ये भावा न तांस्तर्केण योजयेत्"।

इन्द्रियातीत भावों को तर्क से समझने का प्रयास नहीं करना चाहिये। आशय यह है कि जिन लोकोत्तर परोक्ष विषयों में मानव–बुद्वि उछल कूद मचाकर कुण्ठित, किवा पंगु हो जाय, उन विषयों के परिज्ञान के लिए एकमात्रा वेद ही हमारा मार्गदर्शक हो सकता है। इसलिए पाणिनीय महाभाष्यकार के शब्दों में भारतीय ऋषियों का यह गौरवपूर्ण उद्घोष आज भी दिग्दिगान्तों में प्रतिध्वनित है– 'शब्दप्रामाणिका वयम्' अर्थात् हम वेद– प्रमाण को सर्वोपरि मानते हैं। इस प्रकार सिद्व है कि 'विदज्ञाने'धातु से निष्पन्न होने वाला 'वेद' शब्द धात्वर्थक अनुसार लौकिक और पारलौकिक उभयविधि ज्ञान का कोश है।

संदर्भ सूची

1. स्कन्दपुराण प्र० ख०–29 (स्कन्दपुराण) ए० बी० एल० अवस्थी, (सं०) लखनऊ, 1976ण्
2. मार्कण्डेयपुराण– सां० अ० पृ०–, बेंकटेश्वर प्रेस बम्बई, 1959 एफ०ई० पार्जिटर (अंग्रेजी अनुवाद) कलकत्ता–1888–1905
3. अव्यवप्रकाश पृ०–सं०–525 मित्रमित्रा
4. वही
5. महाभारत– क्रिटिकल एडीसन पूना, प्रतापचन्द्र राय, कलकत्ता गीता प्रेस गोरखपुर।
6. वायुपुराण–1/1/130 संस्कृत साहित्य का प्रमाणिक इतिहास में 52 पृ० पर उद्धृत। डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी–2007
7. संस्कार पत्रिाका पृ०–10 अगस्त, 2013 वर्ष–3 अंक–8 संस्कार इन्फो टी०वी० प्रा० लि० के लिए समर मण्डलोई द्वारा वैभव चैम्बर, बान्द्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बान्द्रा (पूर्व) मुम्बई–51 से प्रकाशित।
8. अथर्ववेद 11/7/24 संस्कृत साहित्य का विशद् इहिास पृ०–37 पर उद्धृत। डॉ० पुष्पा दास गुप्ता, ईस्टर्न बुकक लिंकर्स–5225 चन्द्रवल जबाहरनगर, दिल्ली–1994ई०।
9. शतपथ ब्राह्मण– 14/3/3/13 अलवर्ट बेवर, (सं०) लिपजिंग 1994
10. छान्दोग्योपनिषद् 7/1/1, कल्याण उपनिषद् अंक, गीताप्रेस गोरखपुर सं०–2068 ग्यारहवां पुनर्मुद्रण, कोड–659